आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 3/जून 2023
Received:25/05/2023; Accepted:09/06/2023; Published:24/06/2023

आदिवासियत की तीन कहानियाँ
(ग्लैडसन डुंगडुंग की कहानियों के संदर्भ में)

डॉ. श्रीलेखा के. एन
सहायक आचार्या
कोच्चिन विश्वविद्यालय,केरल

डॉ. श्रीलेखा के. एन, **आदिवासियत की तीन कहानियाँ**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 3/अंक 3/जून 2023,(258-262)

आज कल भारतीय भाषाओं पर कई संगोष्ठियाँ आयोजित हो रही हैं। ऐसे अवसर पर आदिवासी भाषाओं में लिखित साहित्यों पर भी विचार-विमर्श होना आवश्यक बन गया है। अंग्रेज़ी भाषा का वर्चस्व,अन्य देशी भाषाओं का आदिवासी समाज और साहित्य पर प्रभाव आदि आदिवासी भाषा की ऊपर पड़ी बेड़ियाँ हैं, जिससे बाहर आना है तो आदिवासी साहित्य के क्षेत्र में विस्तार लाना जरूरी है। आदिवासी आलोचक एवं युवा कवि अनुज लुगुन के शब्दों में – " भाषा वाचिकता का अनिवार्य हिस्सा है। आदिवासियों के भाषिक संदर्भों का अध्ययन किए बिना उनकी वाचिकता को समझना संभव नहीं है। आदिवासी समाज की कई ऐसी भाषाएँ हैं जो अब विलुप्त होने के कगार पर हैं। यदि उनकी भाषा विलुप्त होती है तो उसके साथ ही दुनिया को देखने का एक नज़रिया और एक विश्व-दृष्टि हमेशा के लिए खत्म हो जाएगी। उनकी भाषाओं में उनकी दुनिया अभिव्यक्त हुई है। उनका इतिहास,उनकी संस्कृति और उनकी विश्व-दृष्टि अभिव्यक्त हुई है।"1 आदिवासी भाषाओं में सृजन कम ही हुआ है इसका एक महत्वपूर्ण कारण लिपि का अभाव है। जितनी लिपियाँ जीवंत हैं उन सभी लिपियों के सहारे आदिवासी साहित्यकार साहित्य सृजन कर रहे हैं। केरल के रावुला आदिवासी समाज से सुकुमारन चालीगद्दा, ऊराली समाज से पुष्पम्मा, इरुला समाज से पी. शिवलिंगन, माविलन आदिवासी समाज से धन्या वेंगच्चेरी झारखंड के खड़िया आदिवासी समाज से रोज़ केरकेटटा आदि इसी श्रेणी के कुछ इने-गिने हस्ताक्षर हैं जो आदिवासी भाषा और लिपि के माध्यम से उनकी अस्मिता को बरकरार रखने के लिए सक्रिय हैं । आदिवासियत की इस रचाव-बचाव की प्रक्रिया में अन्य भारतीय भाषाओं ने भी अपनी अपनी भूमिकाएँ अदा की हैं। इन भाषाओं में सबसे अधिक देन हिंदी की है। पूरे भारत में हिंदी के सहारे आदिवासी जीवन की खासियत को वैश्विक धरातल पर ले जाने का कार्य हो रहा है।

हिंदी में सृजनरत आदिवासी साहित्यकारों में ग्लैडसन डुंगडुंग का महत्वपूर्ण स्थान हैं। उनकी रचनाएँ आम जनता की, विशेषकर आदिवासी जन जीवन की गुहार हैं। एक आदिवासी अधिकार कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने समाज में जो कुछ भी देखा, अनुभव किया है उसे अपनी कहानियों का विषय बनाकर बिना किसी आलंकारिता के साथ उसे अपनी कलम के द्वारा अभिव्यक किया है। इसलिए ग्लैडसन डुंगडुंग की कहानियाँ समय के साथ चलती हैं, आदिवासी जीवन को नज़दीक से देखती हैं और उसकी कमियों एवं कमजोरियों को पहचानती हैं और अंत में उसका समाधान भी देती है।

आदिवासी कहानी लेखन की परंपरा सदियों पुरानी है। अश्विनी कुमार पंकज लिखते हैं – "आदिवासी समाज एक वाचिक समाज है और उसकी परंपरा कहने और सुनाने की है। वह कहानियों को मूल अभिव्यक्ति मानता है और इसी के द्वारा खुद की और दुनिया संबंधी अपने सघनतम अनुभवों को समालोची भाव से कहना ज़रूरी समझता है।"2 आदिवासी कहानियों में आदिवासी दर्शन छिपा हुआ है। जिसमें जीने की तरीके ही नहीं बल्कि मनुष्य की सामाजिकता को भी रेखांकित करने वाले कई तत्व समाहित हैं। ये कहानियाँ मनुष्य को जीवन के वास्तविक लक्ष्य तक पहुँचाने की क्षमता रखने वाली हैं। जीवन को नज़दीक से देखने वाली है, जिसका अंतिम लक्ष्य मानवीयता की पराकाष्ठा की उपलब्धि है। वाल्टर भेंगरा 'तरुण', अनुज लुगुन, रोज़ केरकेट्टा, जोराम यालम आदि आदिवासी कहानी लेखन को आगे बढ़ाने वाले महत्वपूर्ण हस्ती हैं। **असुरों की पीड़ा** ग्लैडसन डुंगडुंग की 10 कहानियों का एक संकलन हैं जिसका प्रकाशन 2020 में हुआ था। कहानी के शीर्षक से पाठकों के मन में यह शंका उपस्थित हो जाने की संभावना है कि क्या ये पौराणिक असुरों की गाथा है? आदिवासियों के साथ इनका क्या संबंध रहा है? असुरों के संबंध में जो शंका पाठकों के मन में है उसका समाधान देते हुए अनुज लुगुन लिखते हैं "मुख्यतः संस्कृत मिथकीय परंपरा में 'देवासुर संग्राम' के नाम से विख्यात कथा ही आम जनमानस में लोकप्रिय है जिसके अनुसार असुर देवताओं को परेशान करते थे, उनसे बेवजह युद्ध किया करते थे। वे देवताओं की तपस्या भंग करते थे आदि। उनका चित्रण ऐसी विद्रूप जाति के रूप में किया गया है जो असभ्य और हिंसक हैं,जिनकी प्रवृत्ति नीच है,जो तुच्छ हैं।..... आम जनमानस में स्थापित इस छवि को तोड़ने का पहला प्रयास प्रसिद्ध नृतत्वशास्त्री शरतचंद रॉय ने अपनी पुस्तक ' द मुंडाराज एंड देयर कंट्री' में यह कहते हुए किया कि संस्कृत साहित्य में जिसे असुर कहा गया है वस्तुतः वह एक आदिवासी समुदाय है जो अब भी छोटानागपुर के पठारों में निवास करता है।"3 उनके इस कथन से यह बात स्पष्ट होता है कि आदिवासियों को मुख्यधारा सर्वदा निम्न मानकर हाशिये पर रखा है और उनके साथ अत्याचार भी किया है। कहानी-संग्रह में असुरों का चित्रण तो है, किन्तु वे केवल झारखंड के असुर आदिवासी समाज तक सीमित नहीं है। इसमें दुनिया के सम्पूर्ण आदिवासियों के जीवन और दर्शन समाहित हैं। प्रत्यक्ष में रचनाकार ने 'असुर' शब्द का प्रयोग तो किया है किन्तु उनकी कहानियों में हर जगह तकलीफ झेलने वाले आदिवासियों का चित्रण है। यहाँ तकलीफ के मुख्य कारण सिर्फ विस्थापन या प्रकृति पर होने वाले अत्याचार नहीं हैं, इसमें शहरीकरण की

प्रक्रिया में गायब हुए गाँव और गाँव से अन्य जगहों में तब्दील आदिवासी दोनों स्थितियों का चित्रण हैं । इसलिए इस संग्रह की कहानियों में एक ओर आदिवासियों की समस्या स्पष्ट होती है तो दूसरी ओर उन समस्याओं के मूल कारण भी स्पष्ट है, यह समस्या निवारण के रास्ते को आसान बना लेता है। ग्लैडसन डुंग्डुंग ने प्रस्तुत संकलन के आरंभ में यह बात स्पष्ट किया है कि -"...मानसिक गुलामी के शिकार हुए आदिवासी समाज को शब्द ही मुक्ति दिला सकते हैं।"4 अर्थात् सहानुभूति से सांत्वना दर्शाने से ज़्यादा आदिवासियों के बीच चेतना जगाने की आवश्यकता है । जिसके के लिए शिक्षा की अनिवार्यता है । यह उनकी समस्याओं का सबसे बड़ा समाधान है ।

'महुआटोली से अमन विहार की यात्रा', 'ठाकुर की बिल्डिंग', और 'इंजीनियर साहब' आदि इस संकलन की चर्चित कहानियाँ हैं । तीनों कहानियों में क्रमशः सामाजिकता, आदिवासी दर्शन और भाईचारा आदि से अलग हुए आधुनिक आदिवासियों का चित्रण है । वास्तव में इन तीनों तत्वों से ही आदिवासियत की नींव का निर्माण होता हैं ।

प्रस्तुत संग्रह की पहली कहानी **महुआटोली से अमन विहार की यात्रा** नगरीकरण की प्रक्रिया को आदिवासी जीवन के साथ जोड़ती है । गाँव का जब शहरीकरण हुआ तब आदिवासी संस्कृति और समाज में भी कई प्रकार के परिवर्तन आ गए थे । सुविधाओं की लालच में और शिक्षा की लालसा में आदिवासी भी शहरीकरण के साथ जुड़ गए, अपने समाज के बच्चे शिक्षित हो जाएँगे जैसे सपने देखने वाले आदिवासियों के जीवन में शहर बर्बादी का प्रतीक बन गया । महुआटोली आदिवासी बस्ती का प्रतीक है तो अमन विहार आज की नगरीकृत संस्कृति की उपज है । कहानी जिरगा मुंडा से शुरू होती है,20 साल पहले परदेश जाने वाला जिरगा जब अपना पुरखौती गाँव महुआटोली वापस आता है तो वह चौंक जाता है । क्योंकि गाँव का सारा दृश्य बदल गया था । गगनचुंबी इमारतें,बदबूदार नालियाँ और मच्छड़ों की फौज आदि विकसित शहर का प्रतीक बन गए थे । कहानीकार के शब्दों में - " खपडैले मकान, पेड़ और लहलहाते खेत अब बहुमंजिली इमारतों में तब्दील हो चुके थे । कंक्रीट के नये जंगल में चिड़ियों के लिए जगह नहीं थी । वे वहाँ से विस्थापित हो चुके थे ।"5 महंगाई आम जनजीवन को दुस्साहसपूर्ण बना दिया था । पेड़-पौधों को जड़ों से तोड़कर जमीन को मरुस्थल बना दिया था । कहानी की पृष्ठभूमि में शहरीकरण की समस्या है, किन्तु उसके साथ-साथ आदिवासियों की बर्बादी, पारिस्थितिक सजगता,अतिक्रमकों के प्रस्थान से गाँव के रूप में आए परिवर्तन जैसे कई विषयों का संकेत हैं । पेड़ों की बड़ी मात्रा में हुई कटाई को देखकर जरगा के मन में पारिस्थितिक सजगता जाग उठता है – " शहर अब बहुत बदल गया है । आम,जामुन और पीपल के पेड़ कट चुके हैं । शायद, शहरवासियों को पेड़ों से नफरत है । क्या उन्हें सिर्फ बड़ी-बड़ी बिल्डिंगे पसंद है? "6 इस कथन से शहर की ऐयाशी से युक्त जीवन के प्रति लोगों का लगाव स्पष्ट है । शहर में आने वाले परिवर्तन के साथ-साथ लोगों की मानसिकता में आने वाले अंतर को भी कहानीकार ने स्पष्ट किया है । अमन विहार आदिवासियों का त्याग का प्रतीक है । कहानी का प्रारंभ गाँव का शहरीकरण से है तो दूसरा भाग इस परिवर्तन के फलस्वरूप जल,जंगल और जमीन से बेदखल किए गए

आदिवासियों की करुणगाथा से शुरू होता है। दिकू लोग आदिवासियों की ज़मीन को धोके से हड़प लेते हैं, बड़े-बड़े इमारतें खड़ा करके आदिवासियों को उनकी अपनी ज़मीन से भगाते है, सरकार और पुलिस भी इस अन्याय का समर्थन करते हैं। कहानी में सींगा का कथन इस प्रकार है -"पूरे शहर का निर्माण ही आदिवासियों की ज़मीन को हड़पकर किया गया है। जहां भी मुहल्ले के नाम के साथ विहार,नगर और पुरी जैसे शब्द जुड़े हैं,वहाँ आदिवासियों का गाँव था।"7 आदिवासियों को नृतत्वशास्त्रियों ने और समाजशास्त्रियों ने भारत के प्रथम नागरिकों की संज्ञा दी है,किन्तु आज उनकी रहन-सहन और संस्कृति को सीमा-बद्ध किया गया है, भारत के अधिकांश भूभाग आज गैर-आदिवासियों के कब्जे में है। सींगा का यह कथन इतिहास से चली आ रही वास्तविकता का खुलासा अंकन है। दूसरी ओर आवश्यक सुविधाएं उपलब्ध न कराकर जो सुविधाएं उपलब्ध है उससे उन्हें दूर रखने का प्रयास का चित्रण कहानी में है। बीपीएल की सूची से नाम हटा कर राशन दुकान से राशन न देने की बात भी कहानी में हुई है।

ग्लैडसन डुंगडुंग की दूसरी चर्चित कहानी है **इंजीनियर साहब**। इसकी कथावस्तु कुछ अलग शैली की है। जिसमें आदिवासी समाज के शिक्षित लोगों के मन में अपने समाज के प्रति जो घृणा दृष्टि प्रचलित हुई है उसका खुलासा वर्णन है। राम सिंह मुंडा, मुंडा आदिवासी समाज से है। वे आदिवासियों के बारे में लिखने वाले हैं। एक दिन कुछ शोधार्थी उनके पास शोध के सिलसिले में पहुँच जाते हैं। किन्तु उनकी कथनी और करनी में निहित भिन्नता को देख कर वे अचंभित हो जाते हैं। अपने सरना धर्म से अलग हिंदू धर्म पर आस्था रखना,अपनी मातृ भाषा मुंडारी बोलने से बच्चों को मना करना और अपनी संस्कृति को गँवारू कहकर उसकी उपेक्षा करना आदि राम सिंह मुंडा को परंपरागत आदिवासी से मॉडर्न आदिवासी बना दिया था, वह अपने समाज से दूर रहना पसंद करता था। उनके अनुसार शिक्षित होने का सूचक है अपनी संस्कृति से अलग होना। ऐसे एक विचार रखते हुए भी वे आदिवासियों के संदर्भ में खूब लिखते थे। कहानीकार के शब्दों में - "इंजीनियर साहब अपनी कहानियों में आदिवासी भाषा,संस्कृति और परम्पराओं को बचाने की ज़ोर-शोर से वकालत करते थे। हकीकत में उनका जीवन उसके ठीक विपरीत था। मुंडारी भाषा,संस्कृति और परंपरा उनके घर से विलुप्त हो चुके थे। आदिवासियत की जगह पर उनके परिवार में ब्राह्मणवाद का स्थायी वास हो चुका था।"8 आदिवासी समाज का खूब-बखूब वर्णन करना और ब्राह्मणवाद में जीना, दोनों ही राम सिंह मुंडा की दृष्टि में निहित भिन्नता को सूचित करती है। आदिवासियत की विलुप्तता की एक ओर कारण अन्य धर्मों का प्रभाव है। शिक्षा पाने के पश्चात कुछ लोगों के सोच-विचार में कभी-कभी परिवर्तन आ जाते हैं। वे खुद को आदिवासी कहने से शर्माने लगते हैं। कुछ तो आदिवासी होने के नाम पर सुविधाएं प्राप्त करते हैं ,किन्तु बाद में अपने से निम्न स्थितियों में जीने वाले लोगों की उन्नति के लिए कार्य करने के अलावा उन्हें नजरंदास करते हैं। ऐसे कई आदिवासी युवा लोग हैं जो दूसरी जाति और धर्म से जीवन साथी चुनते हैं। व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार जीने का अधिकार है,किन्तु उसे अपनी जिम्मेदारियों का भी ध्यान रखना चाहिए। तभी अपने साथ-साथ अपने समाज भी आगे बढ़ेंगे।

ठाकुर की बिल्डिंग ग्लैडसन डुंगडुंग की पारिस्थितिक सजगता पर आधारित कहानी है। जिसमें सुगना मुंडा के द्वारा कहानीकार ने इस बात की ओर संकेत किया है कि पेड़-पौधे और पशु-पक्षी मनुष्य के सहचर होते हैं। उनके प्रति संवेदनशील होना प्रत्येक का दायित्व होता है। कहानी में सुगना मुंडा ऐसा एक पात्र है जो अपने लिए सोचने के साथ-साथ दूसरों के प्रति भी संवेदनशील हैं। कहानीकार के शब्दों में – "सुगना बहुत साधारण व्यक्ति था पर उसकी सोच में गहराई थी। वह सबके लिए सोचता था और प्रकृति के साथ जीने के लिए सबको प्रेरित करता था।"9 जहाँ लोग एक मंजिल वाले, दो मंजिल वाले मकान बनाने के पीछे भाग रहे हैं वहाँ सुगना अपनी सुख-सुविधाओं से ज़्यादा अपने सहजीवियों के प्रति प्रेम और करुणा प्रकट करते है। सुगना का निस्वार्थ प्रेम मनुष्य में बची हुई मानवीयता का द्योतक है। कहानीकार चेतावनी देता है कि जब तक मनुष्य अपनी उपभोगी मानसिकता न छोड़ेंगी तब तक प्रकृति की बर्बादी सुनिश्चित है।

ग्लैडसन डुंगडुंग की कहानियाँ किसी न किसी संदेश को लेकर समाप्त होती हैं। पहली कहानी में शहरीकरण का सबसे बड़ा जीवंत शिकार के रूप में रिझा काका को प्रस्तुत किया है। यहाँ नगरीकरण के दुष्परिणामों से पाठकों को अवगत कराने का कार्य भी कहानीकार ने किया है। बाहर जो दिखते है अंतर से उसका रूप अत्यंत विकृत होता है। शहर भी ऐसा है, ऊपर से जितनी सुविधाएं हैं, उसके आंतरिक रूप उससे ज़्यादा बेडौल होता है। दूसरी कहानी में आदिवासी साहित्य के साथ जुड़े हुए आदिवासी लेखकों की आंतरिक मानसिकता का पर्दाफाश करने का प्रयास देख सकते है। कहानीकार के विचार में आदिवासियों के संबंध में लिखने वाले सभी रचनाकर आदिवासियत के सच्चे समर्थक नहीं होते। अंतिम कहानी पर्यावरण और मनुष्य के बीच के अटूट संबंध को दिखाती है। अतः स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि उनकी कहानियों का प्रेरणा-स्त्रोत समाज है ,समाज में जो घटित हो रहा है उसका उसी रूप में चित्रण करना उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता हैं। इसी के कारण उनकी रचना उनके व्यक्तित्व को कालजयी बना लेती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. विनोद तिवारी (सं).पक्षधर.जुलाई-दिसंबर-2022. पृ. 68

2.अश्विनी कुमार पंकज (अनु.). 2023.आदिवासियत और मैं.प्यारा केरकेट्टा फ़ाउंडेशन.भूमिका 11

3. विनोद तिवारी (सं).पक्षधर.जुलाई-दिसंबर-2022. पृ. 67

4. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ. 7

5. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ.14

6. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ.18

7. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ.30

8. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ.174

9. ग्लैडसन डुंगडुंग(2020).असुरों की पीड़ा. आदिवासी पब्लिकेशन्स. पृ.181

****